क्या परमेश्वर को मनुष्य के खोए होने की चिंता है?

‘‘मैं यहोवा बदलता नहीं’’ (मलाकी 3:6)। क्योंकि परमेश्वर कभी बदलता नहीं, इसलिए मनुष्य के खोए होने में उसकी गंभीरता को जानने के लिए केवल अतीत में ही देखना पड़ेगा। मनुष्य के लिए आज उसकी चिंता अतीत में दिखाई गई चिंता से अलग नहीं हो सकती, क्योंकि वह ‘‘कल और आज और युगानुयुग एक सा है’’ (इब्रानियों 13:8)।

कैन के प्रति उसकी चिंता

अतीत को देखने पर, पता चलता है कि सृष्टि का अधिकारी, समय निकालकर एक ऐसे मनुष्य से बात करने के लिए पृथ्वी पर आता है जिसे हम पापी, क्रुद्ध, उदास और नाराज़ कैन के रूप में जानते हैं। कैन को सही, अर्थात ‘‘भला’’ करने का अवसर दिया गया था (उत्पत्ति 4:7); परन्तु उसने स्वयं भला करना नहीं बल्कि गलत करना चुना था। स्मस्त अधिकार प्राप्त, स्वर्ग का व्यस्त परमेश्वर स्वर्ग में रहकर, आज्ञा न मानने वाले उस कैन को अनदेखा कर सकता था; परन्तु एक पापी जन के प्रति उसकी चिंता परमेश्वर को एक व्यक्ति के साथ निजी काम के लिए स्वर्ग से नीचे तक ले आई।

परमेश्वर ने कैन को बचाने की इच्छा की थी। उसने उस व्यक्ति के लिए पाप पर काबू पाकर प्रभु द्वारा स्वीकृत होना सम्भव दिखाकर उसे समझाया था (उत्पत्ति 4:7)। कैन द्वारा परमेश्वर के प्रस्ताव को उचित रूप से मानने में असफल होने के लिए किसी भी प्रकार से उसकी चिंता कम नहीं होती। भला करने वाला प्रभु इस बात से आहत था कि कैन ने बुराई को चुना था।

नूह के समय के लोगों के प्रति उसकी चिंता

नूह के समय, जब लोगों की हवस बहुत बढ़ गई थी और ‘‘उन्होंने जिस जिस को चाहा उनसे ब्याह कर लिया’’ था (उत्पत्ति 6:2), तो पवित्र और प्रेमी परमेश्वर को बहुत बुरा लगा था। ‘‘और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्यों को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ’’ (उत्पत्ति 6:6)। परमेश्वर के लिए गलती के कारण मन को बदलने के अर्थ में, पछताने की बात असम्भव है (1 शमूएल 15:29)। परन्तु मनुष्य के ढीठ होने से

परमेश्वर शोकित और दुखी होता है (इब्रा.: *nahan;* 1 शमूएल 15:11, 35; न्यायियों 2:18; यिर्मयाह 42:10) और पछताता रहता है (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

इन्सान के प्रति अपने लगाव के कारण परमेश्वर ने कभी भी पाप को अनदेखा करके दण्ड देना नहीं रोका है। नूह के समय के लोग, 120 साल तक नूह के प्रचार से परमेश्वर के आग्रह को सुनने के बाद, परमेश्वर का क्रोध पड़ने से डूब गए थे। परमेश्वर की इच्छा उनका विनाश करना नहीं थी परन्तु पापियों ने ही उसे उन्हें दण्ड देने के लिए विवश किया था।

मोआब के प्रति उसकी चिंता

लूत के वंशज मोआबी लोगों ने व्यभिचार किया और मूर्तियों के आगे बलिदान चढ़ाए थे, तौभी परमेश्वर उनसे प्रेम करता था; क्योंकि उसे उनकी चिंता थी। उसने पुकारकर कहा था ''मेरा मन मोआब के लिए दुहाई देता है'' (यशायाह 15:5)। ''इसलिए मेरा मन मोआब के कारण और मेरा हृदय कीरहैरेस के कारण वीणा का सा क्रंदन करता है'' (यशायाह 16:11)। यद्यपि मोआबी लोग धार्मिकता से तो बहुत दूर हो गए थे (देखिए गिनती 25:1–5), परन्तु वे परमेश्वर की सम्भाल से दूर नहीं हो सकते थे।

नीनवे के प्रति उसकी चिंता

बड़े नगर नीनवे के अश्शूरी लोग भी इसी तरह धार्मिकता से दूर हो गए थे। (प्रभु ने कहा था ''उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है''; योना 1:2) कोमल तथा दुखी मन से परमेश्वर मनुष्य की भलाई के लिए निरंतर काम कर रहा था। उसने नीनवे के लोगों के आचरण को बदलने के लिए आत्माओं को जीतने वाला एक योग्य व्यक्ति भेजा। अन्त में योना ने वहां पहुंचकर बहुत ही अच्छा काम किया, और पूरे नगर के पश्चात्ताप करने पर परमेश्वर का मन आनन्दित हो गया था।

स्वयं योना का विचार उन खोए हुए लोगों के प्रति अच्छा नहीं था। उससे उन भटके हुए लोगों की वैसी चिंता नहीं थी जैसी परमेश्वर को थी। परमेश्वर ने उसे यह दिखाने की कोशिश की कि उन छोटे बच्चों की खातिर ''जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते'' मर रहे लोगों के लिए चिंता करनी आवश्यक है (योना 4:11)।

आज्ञा न मानने वाले इस्राएलियों के प्रति उसकी चिंता

इब्राहीम के वंशजों को मिसर के कठोर हृदयी लोगों की कठिन दासता में स्वर्ग के परमेश्वर को पीड़ा हुई थी। उसने कहा था:

> मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिसर में हैं उनके दुख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उसको भी मैंने सुना

है, और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है (निर्गमन 3:7)।

उन्हें वहां से निकालकर बाद में इसके बारे में बताकर उसे अच्छा लगा था:

> जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उससे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिसर से बुलाया। ...मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैं ने उन से किया (होशे 11:1, 4)।

परमेश्वर का स्नेही मन पहले से ही जानता था कि इस्राएली लोग उसके अनुग्रह को सराहेंगे नहीं इसलिए वह बहुत दुखी हुआ:

> भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें, जिस से उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे (व्यवस्थाविवरण 5:29)।

जब वे शैतान की सेवा कर रहे थे और पाप में जीवन बिता रहे थे तब भी परमेश्वर ने उनकी सम्भाल की। उसने उनसे निवेदन किया:

> सो तू उन से यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो (यहेजकेल 33:11)।

स्वर्ग का परमेश्वर बुराई से कोई समझौता नहीं कर सकता था। बार-बार उसे अपने बच्चों को डांटना आवश्यक था, परन्तु डांटना उसे अच्छा नहीं लगता था:

> क्या एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं? जब जब मैं उसके विरुद्ध बातें करता हूं, तब तब मुझे उसका स्मरण हो आता है। इसलिए मेरा मन उसके कारण भर आता है: और मैं निश्चय उस पर दया करूंगा, यहोवा की यही वाणी है (यिर्मयाह 31:20)।

परमेश्वर का गहरा प्रेम मां के प्रेम से भी अधिक है:

> क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे

नहीं भूल सकता (यशायाह 49:15, 16)।

आज्ञा न मानने वाले इस्राएलियों को दण्ड देने से उसे खुशी नहीं होती थी क्योंकि ''उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया'' (यशायाह 63:9क)। उनके गलत कामों से उसे दुख होता था; परन्तु अपनी पवित्रता के कारण, उसके लिए उन्हें क्लेश देना आवश्यक था: ''उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उन से लड़ने लगा'' (यशायाह 63:10)।

आरम्भ से अन्त तक की बात को जानने वाला देख सकता है कि कुछ लोग पश्चात्ताप करेंगे, और अपने महान प्रेम से उसने मसीहियत के लिए एक खाका तैयार कर लिया था। मसीही होने की सबसे बड़ी सम्पत्ति, राज्य में होने की आशीष है, जिसे न आंख ने देखा था, न कान ने सुना था: ''क्योंकि प्राचीन काल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न ही कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहने वालों के लिए काम करे'' (64:4)। प्रतिज्ञा किए हुए राज्य में, खोए हुओं के लिए परमेश्वर की चिंता एक चरम तक आ जानी थी।

आज पापियों के प्रति उसकी चिंता

एक पिता का प्रेम न केवल मोआबियों, नीनवे के लोगों, और इस्राएलियों के लिए ही था बल्कि सब जातियों के लोगों के लिए है। परमेश्वर पक्षपात नहीं करता। उसके पुत्र को सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए भेजा गया था (1 यूहन्ना 2:2)। उसकी दिलचस्पी इस बात में है कि किसी भी मनुष्य का नाश न हो।

2 पतरस 3:9 में हम पढ़ते हैं, ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले।'' इन सच्चाइयों को जानने वाले हर पापी को चाहिए कि प्रेम से उसकी बात को मान ले क्योंकि पहले परमेश्वर ने प्रेम किया है (1 यूहन्ना 4:19)।